चिकित्सा-ज्योतिष में रोगों का विश्लेषण

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

एड्स केवल शारीरिक पीड़ा नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति को मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से भी तोड़ देता है. चन्द्र-दोष मानसिक भय, चिंता, अवसाद और निराशा उत्पन्न करता है. राहु सामाजिक तिरस्कार, भ्रम और आत्महीनता लाता है. शनि जीवन में भार और निराशा का भाव उत्पन्न करता है. इसीलिए रोगी को मानसिक-सामाजिक साहस प्रदान करना उपचार का अनिवार्य अंग है. ध्यान, प्राणायाम, त्राटक, ओंकार-ध्यान, सहस्रार-ध्यान मनोबल को स्थिर करते हैं. सात्त्विक भोजन—दूध, घी, तुलसी, हल्दी, फल और शुद्ध जल—ओज को पुनर्स्थापित करते हैं.

चिकित्सा-ज्योतिष के पारंपरिक, दार्शनिक और सिद्धान्तपरक दृष्टिकोण में मानव-शरीर केवल प्राणियों का स्थूल ढाँचा नहीं है, अपितु वह सृष्टि के सूक्ष्मतर कंपन, ब्रह्मांडीय शक्तियों और ग्रह-नक्षत्रों की छिपी हुई क्रियाओं का एक जटिल और अत्यन्त संवेदनशील उपकरण है. वैदिक ज्योतिष यह मानता है कि मानव-शरीर में स्थित ओज, तेज, प्राण, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार पर ग्रहों के सूक्ष्म प्रभाव कार्य करते रहते हैं, जिनके द्वारा शरीर की समग्र क्रिया-व्यवस्था संचालित होती है. इसी आधार पर चिकित्सा-ज्योतिष में रोगों का विश्लेषण केवल शरीर की संतुलन-व्यवस्था पर नहीं, बल्कि मानसिक, प्राणिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्तरों पर होता है. जब हम एड्स जैसी प्राणघातक व्याधि का अध्ययन इस दृष्टि से करते हैं, तब स्पष्ट होता है कि यह रोग शरीर के भीतर स्थित रक्षा-तंत्र को धीरे-धीरे निष्क्रिय कर देता है और शरीर के ओज का नाश करता है, जिसके अभाव में व्यक्ति साधारण से साधारण संक्रमण के प्रति भी असुरक्षित हो जाता है.

वैदिक ज्ञान-परम्परा में चन्द्रमा को शरीर के रस, रक्त, स्त्राव, ओज, मनोबल, मानसिक-संतुलन तथा जीवन-रस का प्रतीक माना गया है. जब चन्द्रमा पर राहु-केतु की दृष्टि पड़ती है या वह शनि-मंगल से पीड़ित होता है, पापकर्तरी योग में फँस जाता है, अमावस्या के समीप हो जाता है, अथवा उसकी बल-वृद्धि में अवरोध आ जाता है, तब शरीर के भीतर स्थित रक्षा-तंत्र शिथिल होने लगता है. यह शिथिलता ही आगे चलकर ओज-क्षय का कारण बनती है, जिसका वर्णन आयुर्वेद में भी किया गया है कि जब ओज सूख जाता है, तब शरीर में प्राण का प्रवाह रुकने लगता है और रोग भीतर तक अपना स्थान बना लेते हैं.

एड्स रोग का गहन विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि यह केवल संक्रमण से उत्पन्न होने वाली सामान्य बीमारी नहीं है, बल्कि यह शरीर के धातु-तंत्र पर, विशेष रूप से रस और रक्त-धातु पर प्रत्यक्ष प्रहार करता है. ज्योतिष में षष्ठ भाव को रोग-भाव कहा गया है, जो शरीर की विकृतियों, संक्रमणों, पुरानी व्याधियों और छिपी हुई पीड़ाओं का कारक है. जब षष्ठ भाव का स्वामी राहु, केतु, शनि या मंगल से पीड़ित हो जाता है, अथवा षष्ठ भाव अष्टम या द्वादश भाव से मजबूती से जुड़ जाता है, तब रोगों का प्रवेश अवश्यम्भावी हो जाता है. यदि षष्ठ भाव राहु या केतु की दृष्टि में आ जाए, तो रोग अदृश्य रूप से पनपता है, धीरे-धीरे अपनी जड़ें जमाता है और शरीर में उग्र रूप ले लेता है. यह प्रक्रिया एड्स की रोग-प्रकृति से पूर्णतः मेल खाती है, क्योंकि एड्स में रोग प्रारम्भिक अवस्था में प्रायः छिपा रहता है, लक्षण नहीं देता, किन्तु भीतर ही भीतर शरीर की रक्षा-शक्ति को नष्ट करता रहता है.

अष्टम भाव ज्योतिष में गूढ़, रहस्यमय, दीर्घकालिक, विषयुक्त और अपचयकारी व्याधियों का कारक है. अष्टम भाव पर राहु या शनि का गहरा प्रभाव एड्स जैसी गहन और छिपी व्याधि को जन्म देता है, क्योंकि राहु अदृश्य, विषम और दुषित शक्तियों का प्रतीक है. इस भाव में राहु की स्थिति शरीर को भीतर से खोखला करती है और रोग को अत्यन्त दीर्घकालिक बना देती है. अष्टम भाव का केतु से सम्बन्ध प्रतिरक्षा-तंत्र को काट देता है और शरीर के सूक्ष्म रक्षा-तंत्र को निष्क्रिय कर देता है. इसी प्रकार द्वादश भाव शरीर की ऊर्जा-हानि, व्यय, निद्रा, अस्पताल और बंधन का कारक है. द्वादश भाव के दूषित हो जाने पर व्यक्ति रोगों के लिए अधिक संवेदनशील हो जाता है. विशेष रूप से जब द्वादशेश राहु या शनि से पीड़ित हो, तब रोग-प्रतिकारक क्षमता घटती जाती है. एड्स में अक्सर यही होता है—रोगी की जीवन-शक्ति धीरे-धीरे घटती जाती है, शरीर थकान से भर जाता है, और प्राण-ऊर्जा शिथिल होने लगती है.

शुक्र का रोग में योगदान भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि शुक्र शरीर के द्रवों, रसधातु, प्रजनन-तंत्र, सुख, सौन्दर्य, और इन्द्रिय-शक्ति का अधिपति है. शुक्र का राहु से युति या दृष्टि शरीर के द्रवों में विकृति उत्पन्न करती है और संवेदनशील क्षेत्रों को दुर्बल कर देती है. यह स्थिति संक्रमण की संभावनाओं को बढ़ा देती है. शुक्र और राहु का संबंध प्रायः यौन-विकृतियों, अनियमित संपर्कों, अविचारित संबंधों और भोग-प्रधान जीवन की ओर संकेत करता है, जिसके कारण संक्रमण का प्रवेश होता है. अष्टम भाव में शुक्र-राहु का संयोग विशेष रूप से खतरनाक माना जाता है.

शनि इस रोग में आधारभूत भूमिका निभाता है क्योंकि शनि दीर्घकालिकता, पीड़ा, कष्ट, अवरोध, अभाव और भय का कारक है. शनि जब चन्द्रमा, शुक्र या लग्न पर पाप-दृष्टि डालता है तब शरीर भाग्यहीन हो जाता है और रोग शीघ्रता से उग्र रूप धारण कर लेता है. शनि की वक्रता रोग को और अधिक तीव्र बना देती है. राहु-शनि का संयोग रोग को भयंकर बना देता है. राहु शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को विध्वस्त करता है जबकि शनि उसे स्थायी रूप दे देता है. इन दोनों का संयोजन एड्स जैसी दीर्घकालिक और प्राणघातक व्याधियों में प्रायः देखा जाता है. रोग-प्रकृति का यह विस्तृत विश्लेषण तभी पूर्ण होता है जब हम ग्रहों की दशाओं का अध्ययन भी करें. चन्द्रमा की राहु-दशा या केतु-दशा में प्रतिरक्षा-शक्ति नष्ट होने लगती है. शुक्र-राहु की दशा रोग के प्रवेश को बढ़ाती है. शनि-राहु या राहु-शनि की दशाएँ रोग को भयावह रूप देती हैं. यदि इन दशाओं के समय अष्टम भाव भी सक्रिय हो जाए, तो शरीर पर रोग तीव्र प्रहार करता है.

अब यदि उपचार की बात करें, तो चिकित्सा-ज्योतिष रोगों को ग्रह-ऊर्जा की विकृति के रूप में देखता है, और उपचार को ग्रह-शांति, प्राण-ऊर्जा की पुनर्स्थापना और मानसिक-संतुलन के माध्यम से करता है. चन्द्र-शांति हेतु महामृत्युंजय जप सर्वोपरि माना गया है, क्योंकि यह मंत्र शरीर की धातुओं, नाड़ियों और ओज को स्थिर करता है. सोमवार को व्रत, शिवाभिषेक, चन्द्र को अर्ध्य देना, दही-चावल का दान, और रजतमय वस्तुओं का उपयोग मन और शरीर दोनों को स्थिर करता है.

गीता जयंती पर क्या करें? जानें पूजा-व्रत विधि

गीता जयंती का पवित्र पर्व हर वर्ष मार्गशीर्ष माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाया जाता है. मान्यता है कि इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को गीता का दिव्य उपदेश दिया था. साल 2025 में यह शुभ तिथि 1 दिसंबर को पड़ेगी. इस दिन गीता पाठ, व्रत और श्रीकृष्ण पूजा का विशेष महत्व माना गया है.

गीता जयंती हिंदू धर्म का अत्यंत महत्वपूर्ण और ज्ञानपरक पर्व माना जाता है. मान्यताओं के अनुसार, इसी दिन कुरुक्षेत्र के मैदान में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को धर्म, कर्म और मोक्ष का अद्भुत संदेश देते हुए गीता का उपदेश दिया था. यही कारण है कि मार्गशीर्ष माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी को मोक्षदा एकादशी भी कहा जाता है.

इस दिन सुबह स्नान-ध्यान के बाद स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूजा स्थान को गंगाजल से शुद्ध किया जाता है. भगवान श्रीकृष्ण की तस्वीर या प्रतिमा स्थापित कर धूप-दीप, पुष्प, तुलसी दल, अक्षत और मिठाई चढ़ाई जाती है. गीता पाठ करना इस दिन अत्यंत शुभ माना जाता है, विशेष रूप से 18वें अध्याय का पाठ मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है.

माना जाता है कि गीता का पाठ मन, बुद्धि और जीवन के लक्ष्य को सही दिशा देता है और आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग खोलता है. संध्या के समय भी श्रीकृष्ण की आराधना तथा मंत्र-जप करने का विधान बताया गया है. गीता जयंती आत्मज्ञान, सत्य, कर्तव्य और धर्म के प्रति जागरूकता बढ़ाने का पर्व है.

धार्मिक ग्रंथों में इसका महत्व इसलिए भी बताया गया है क्योंकि यह दिन मानव जीवन के उद्देश्य को समझने और अपनी कर्मशीलता को उच्चतम स्तर पर ले जाने की प्रेरणा देता है.

एकादशी व्रत में तुलसी पूजा का महत्व, ऐसे पाएं विष्णु कृपा

मोक्षदा एकादशी पर तुलसी पूजा से खुलेंगे सौभाग्य के द्वारहिंदू धर्म में एकादशी तिथि को अत्यंत शुभ और पवित्र माना गया है. वर्ष में आने वाली सभी एकादशियों में से मोक्षदा एकादशी का विशेष महत्व बताया गया है, क्योंकि इस दिन न केवल भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था बल्कि इसी दिन व्रत रखने और नियमों का पालन करने से मोक्ष की प्राप्ति होने का भी विश्वास है.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, एकादशी के दिन माता तुलसी स्वयं भगवान विष्णु के लिए निर्जला उपवास रखती हैं, इसलिए इस दिन तुलसी को छूना, पानी देना या पत्ते तोड़ना वर्जित माना गया है. लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि एकादशी के दिन तुलसी माता की पूजा नहीं की जा सकती. बिना स्पर्श किए भी तुलसी की आराधना करने के कई विधि-विधान ग्रंथों में वर्णित हैं. तुलसी के पास दीपक जलाना, मंत्रों का जप करना और पहले से तोड़े गए तुलसीदल को भोग में शामिल करना अत्यंत शुभ माना जाता है. इस विशेष दिन यदि तुलसी के नियमों का सही पालन किया जाए, तो विष्णु-लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है और जीवन में शुभता, समृद्धि और आध्यात्मिक उन्नति के द्वार खुलते हैं.मोक्षदा एकादशी का दिन अपने आप में अत्यंत पवित्र माना जाता है, क्योंकि यह तिथि उन कुछ अवसरों में से एक है जब भगवान विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त करने का मार्ग भक्तों के लिए खुला होता है. शास्त्रों में कहा गया है कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए केवल त्याग ही पर्याप्त नहीं, बल्कि सही विधि से पूजा और व्रत का पालन भी आवश्यक है.

> धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, एकादशी के दिन माता तुलसी भगवान विष्णु के लिए निर्जला व्रत रखती हैं, इसीलिए इस तिथि पर तुलसी को छूना या उसमें जल अर्पित करना निषेध बताया गया है. कहा जाता है कि ऐसा करना तुलसी माता के उपवास में विघ्न डालता है और यह धार्मिक दृष्टि से उचित नहीं माना जाता. हालांकि, भक्त बिना तुलसी को छुए भी उनकी पूजा कर सकते हैं. इसके लिए सुबह स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करने के बाद तुलसी के आस-पास सफाई करें, वहां दीपक जलाएं, और तुलसी स्तुति या तुलसी गायत्री मंत्र का जाप करें.

लॉफिंग बुद्धा की मूर्ति घर में रखने से मिलता है सौभाग्य?

लॉफिंग बुद्धाएक ऐसा नाम, जिसे सुनते ही दिमाग में एक गोल-मटोल, हँसते हुए चेहरे वाली मूर्ति याद आती है. लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि यह हंसता हुआ बुद्ध वास्तविक रूप से जापान के एक भिक्षु होतेई से प्रेरित है. होतेई महात्मा बुद्ध के प्रत्यक्ष शिष्य तो नहीं थे, लेकिन बौद्ध परंपरा में उन्हें एक ऐसे भिक्षु के रूप में याद किया जाता है जिनकी हंसी ने दुनिया का दृष्टिकोण बदल दिया. मान्यता है कि जब होतेई को आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त हुआ, तो वे जोर-जोर से हंसने लगे. उनके लिए हंसी ही ज्ञान का सबसे सच्चा रूप बन गई और उन्होंने जीवन का उद्देश्य तय किया—लोगों को हंसाना और उनके जीवन में खुशियां बांटना.

यही कारण है कि चीन और जापान में लोग उन्हें कहने लगे. समय के साथ उनकी यह छवि इतनी प्रसिद्ध हुई कि लोग घरों, दुकानों और ऑफिस में उनकी मूर्तियां रखने लगे, इसे गुड लक, समृद्धि और खुशहाली का प्रतीक माना जाने लगा. आज भी होतेई की मुस्कान को सकारात्मक ऊर्जा और आध्यात्मिक संतुलन का सबसे सरल माध्यम माना जाता है. जापान के साधु होतेई का जीवन बहुत साधारण था, लेकिन उनकी मुस्कान असाधारण. कहा जाता है कि होतेई एक घूमने-फिरने वाले भिक्षु थे, जिनका बड़ा पेट और चौड़ी हँसी उनकी पहचान बन गया. उनके पास हमेशा एक बड़ा सा थैला रहता था जिसमें वे बच्चों को देने के लिए खिलौने और खाने-पीने की चीजें रखते थे. यही कारण है कि एशिया के कई हिस्सों में उन्हें खुशियों का भिक्षु भी कहा जाता है. माना जाता है कि उसकी मुस्कान घर की नकारात्मकता दूर कर देती है. इसलिए चीन, जापान और अब भारत में भी लोग को घर, ऑफिस, दुकान या पूजा स्थान पर रखते हैं. विशेष रूप से फेंगशुई में यह माना जाता है कि को उत्तर-पूर्व दिशा में रखा जाए तो सौभाग्य बढ़ता है.

कहीं आपके घर में तो नहीं छिपा वास्तु दोष? ऐसे पहचानें

> वास्तु शास्त्र में ऐसे कई लक्षण बताए गए हैं, जिन्हें समझकर समय रहते समस्या का समाधान किया जा सकता है. आज हम आपको उन्हीं संकेतों के बारे में बता रहे हैं जो आपके घर में मौजूद छिपे हुए दोषों की ओर इशारा करते हैं और जिन्हें समझकर आप भविष्य में आने वाली कई मुश्किलों से खुद को बचा सकते हैं.

वास्तु शास्त्र को सिर्फ प्राचीन मान्यता नहीं, बल्कि घर के ऊर्जा संतुलन का एक विज्ञान भी माना जाता है. हमारे आसपास मौजूद हर दिशा, हर वस्तु और हर गतिविधि सकारात्मक या नकारात्मक ऊर्जा को प्रभावित करती है. कई बार हम अनजाने में अपने घर में ऐसे बदलाव कर लेते हैं जो धीरे-धीरे जीवन में तनाव, रुकावटें, आर्थिक परेशानियां या रिश्तों में कड़वाहट बढ़ाने लगते हैं. ये बदलाव दिखाई तो छोटे देते हैं, लेकिन वास्तव में ये छिपे हुए वास्तु दोष का संकेत होते हैं.

अगर आपके घर में बेवजह झगड़े बढ़ रहे हैं, मन हमेशा भारी रहता है, कामों में रुकावटें आती हैं, आर्थिक संकट बार-बार चेहरा दिखाता है या घर का माहौल अचानक बोझिल लगने लगे, तो यह केवल सामान्य बात नहीं—बल्कि एक संकेत हो सकता है कि आपके घर में कोई वास्तु दोष मौजूद है. वास्तु शास्त्र में ऐसे कई लक्षण बताए गए हैं, जिन्हें समझकर समय रहते समस्या का समाधान किया जा सकता है. आज हम आपको उन्हीं संकेतों के बारे में बता रहे हैं जो आपके घर में मौजूद छिपे हुए दोषों की ओर इशारा करते हैं और जिन्हें समझकर आप भविष्य में आने वाली कई मुश्किलों से खुद को बचा सकते हैं.

वास्तु शास्त्र कहता है कि हर घर में ऊर्जा का प्रवाह होता है, और जब यह प्रवाह बाधित होता है तो जीवन में परेशानियां बढ़ने लगती हैं. सबसे पहला संकेत है—घर में बढ़ती नेगेटिविटी. यदि अचानक बिना किसी खास कारण के घर में बार-बार झगड़े होने लगें, परिवार के सदस्य चिड़चिड़े रहने लगें या छोटी बातों का बड़ा मुद्दा बन जाए, तो यह पॉजिटिव एनर्जी के खत्म होने का संकेत है. ऐसी स्थिति अक्सर तब बनती है जब घर की दिशा, वस्तुओं का स्थान या वास्तु ऊर्जा असंतुलित हो जाती है.

> अंत में, दीवारों पर दरारें या पेंट का उखड़ना भी घर की ऊर्जा कमजोर होने का संकेत है. लगातार दरारें बनना इस बात का प्रतीक माना जाता है कि घर में कोई वास्तु असंतुलन या रुकावट मौजूद है जो जीवन में तनाव का कारण बन सकता है. इन संकेतों को समय रहते पहचानकर घर की ऊर्जा को संतुलित किया जा सकता है और जीवन में आने वाली कई समस्याओं को समय पर रोका जा सकता है.

दूसरा संकेत है बेकार और टूटा सामान का जमा होना. स्टोर रूम, रसोई, अलमारी या घर के कोनों में पड़ा पुराना इलेक्ट्रॉनिक कचरा, टूटा ग्लास, बंद घड़ी या खराब फर्नीचर ऊर्जा को रोकता है. वास्तु के अनुसार, जहां ऐसी वस्तुएं होती हैं वहां भारीपन, घुटन या बदबू महसूस होना सामान्य है, और यह साफ इशारा है कि घर की ऊर्जा ठहर चुकी है.

तीसरा संकेत है बंद खिड़कियां और कम रोशनी. प्राकृतिक रोशनी और हवा घर में सकारात्मक ऊर्जा का सबसे बड़ा स्त्रोत हैं. यदि घर में हमेशा अंधेरा रहता है, खिड़कियां खुलती नहीं या हवा का प्रवेश कम है, तो यह भी एक बड़ा वास्तु दोष माना जाता है. ऐसेतीसरा संकेत है बंद खिड़कियां और कम रोशनी.

प्राकृतिक रोशनी और हवा घर में सकारात्मक ऊर्जा का सबसे बड़ा स्त्रोत हैं. यदि घर में हमेशा अंधेरा रहता है, खिड़कियां खुलती नहीं या हवा का प्रवेश कम है, तो यह भी एक बड़ा वास्तु दोष माना जाता है. ऐसे घरों में मन दुखी रहने लगता है, आलस्य बढ़ता है और मानसिक तनाव भी बढ़ सकता है.

चौथा संकेत है पानी का गलत दिशा में रखा होना. वास्तु में पानी को जीवन, भावनाओं और आर्थिक स्थिति से जोड़ा गया है. यदि घर में बाल्टी, फिश टैंक, वाटर प्यूरीफायर या मोटर दक्षिण या दक्षिण-पश्चिम दिशा में हो, तो इससे आर्थिक नुकसान और मानसिक अस्थिरता का खतरा बढ़ जाता है. पानी का स्थान हमेशा उत्तर-पूर्व दिशा में शुभ माना गया है.

राशिफल

दिनांक- 30 नवम्बर से 06 दिसम्बर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य वृश्चिक राशि में, मंगल वृश्चिक राशि में, वक्री बुध तुला राशि में, ता. 30 को 10.18 दिन से मार्गी, ता. 6 को 9.53 रात से वृश्चिक राशि में, वक्री गुरू कर्क राशि में, शुक्र वृश्चिक राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मीन, मेष वृषभ और मिथुन राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव:- इस सप्ताह कहीं कहीं बूंदाबांदी हिमपात का योग है, पर्वतीय भू-भाग में भारी बर्फबारी होगी, धुंध और कोहरा से आवागमन अवरूद्ध होगा, यान दुर्घटना भी हो सकती है. ता. 3 को ज्येष्ठायां सूर्य के प्रभाव से सोना, चांदी, चावल, गेहू, जौ, चना, अलसी, सरसों, ऐरेण्ड, हींग, गुग्गल, पारा, गुड़, खाड़, घी, तेल के व्यापार में जोरदार तेजी के बाद मंदी के झटके आयेंगे. व्यापारी बाजार देखकर कार्य करें. खेती को हानि पहुंचने से व्यापार का क्षेत्र प्रभावित होगा.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

बुसोमवार	01 दिसम्बर को	मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयंती
मंगलवार	02 दिसम्बर को	भौम प्रदोष व्रत
बुधवार	03 दिसम्बर को	पिशाचमोचन यात्रा
गुरूवार	04 दिसम्बर को	श्री दत्तात्रेय प्रकटोत्सव, स्नानदान व्रत पूर्णिमा

मेष
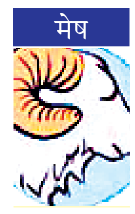
यह सप्ताह व्यवसाय की दृष्टि से सावधानी का रहेगा, मित्र वर्ग से परेशानी हो सकती है, मानसिक सुख शांति में कमी का योग है, परन्तु किसी नये व्यक्ति का सहयोग आपकी परेशानी कम करने में सहायक रहेगा, अधिकारी वर्ग का सहयोग कम रहेगा, अपूर्ण समाचारों पर निर्णय करना हानिकारक रहेगा, कोई पुरानी वस्तु मिलने से मन में खुशी होगी.

वृषभ

आप अपनी कार्यक्षमता से अपने वरिष्ठ लोगों को प्रभावित करेंगे, सहयोगियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा, सप्ताह की शुरूआत में आप यात्रा का विचार कर सकते हैं, वित्तीय मामलों में पुरानी समस्याओं को दूर करने में सहयोगी रहेंगे, नवीन योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, आर्थिक एवं व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता के संकेत हैं, कानूनी विवादों में विशेष खर्च और सफलता के योग हैं.

मिथुन
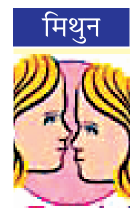
समय के स्वरूप को देखकर कार्य करना लाभकारी होगा, भूमि भवन, क्रय-विक्रय से लाभ की संभावना है, मशीनरी की टूटफूट पर खर्च हो सकता है, राजकीय क्षेत्र में सफलता मिलेगी, व्यापारिक साझेदारी के कार्यो में सहयोग रहेगा, नये संपर्क लाभकारी रहेंगे, हिम्मत दूरदर्शिता एवं सहनशीलता से आपको अपनी सारी समस्याओं को दूर करने में मदद मिलेगी.

कर्क

शुभ सूचना से मन प्रसन्न हो सकता है, साझेदारी के कार्यो में नया कार्य शुरू होने का योग है, धन संबंधी मामलों में खुद निर्णय लें, बातचीत में सावधानी रखें, नये कारोबार को ऊँचाईयों पर पहुंचाने में मदद मिलेगी, व्यापारिक मित्रों के साथ नये समझौते हो सकते हैं, सप्ताह के मध्य जल्दबाजी में लिये गये निर्णय कुछ समय बाद बदलने की नौबत आ सकती है.

सिंह
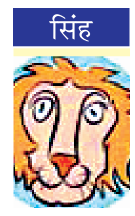
मानसिक परेशानी व निराशा का अनुभव होगा, खरीदी बिक्री के कार्य से लाभ होगा, कारोबार के सिलसिले में दूर जाने की संभावना है, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी, प्रियजनों से निकटता बढ़ने के अवसर आयेंगे, राजकीय कार्यो में सफलता के योग हैं, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, दूर गये मित्र के संबंध में शुभ सूचना मिलेगी.

कन्या
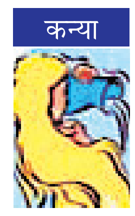
आपको मान सम्मान प्राप्त होगा, वित्तीय मामलों में सोच समझकर फैसला करें, इससे अच्छे लाभ की संभावना है, स्वास्थ्य में सुधार होगा, आत्म विश्वास बना रहेगा, शादी विवाह की रूपरेखा पर विचार होगा, शत्रुओं से समझौता करने में लाभ की संभावना है, धार्मिक कार्यो में व्यय होगा. कोई पुरानी इच्छा पूर्ण होने का योग है, उत्साहवर्धक समाचार मिलने का योग है.

तुला

सामाजिक क्षेत्र में रूचि रहेगी, व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा, व्यवसायिक मामलों में संबंध बढ़ेंगे, आप अपने सुझावों को सहयोगियों के सामने रख सकते हैं, जिससे लाभ होगा, कामकाज के सिलसिले में यात्रा संभाव्य है, धार्मिक कार्यो की ओर रूचि एवं रूझान रहेगी, भूमि भवन मकानादि के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय हो सकता है, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

वृश्चिक
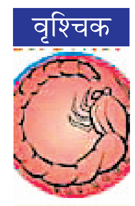
सप्ताह के पूर्वार्ध में शारीरिक शिथिलता का अनुभव हो सकता है, उदर विकार से कष्ट होगा, अधिकारियों से अपने कार्य के संबंध में उचित आश्वासन मिलने के योग हैं, चतुराई से अपना कार्य निकालना आसान रहेगा, घर में अतिथि आगमन से दायित्व बढ़ेगा, व्यर्थ के विवादों से बचना चाहिये, धैर्य रखकर कार्य करें, बड़े लोगों का सहयोग लाभदायक रहेगा.

धनु
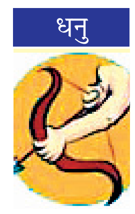
सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, आगे बढ़ने के अवसर आयेंगे, कामकाज पर विस्तार होगा, गफलतबाजी के कारण मित्रों से विरोध हो सकता है, कार्य सुचारू रूप से चलेगा, साझेदारी के कार्यो में पूरी तरह जांच पड़ताल कर लें, यदि आप रक्तचाप या अन्य गर्म बीमारियों से पीड़ित हैं, तो इस सप्ताह के मध्य में विशेष सावधानी रखें, सप्ताहान्त में सफलता का योग है.

मकर
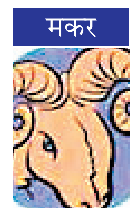
उलझे हुये कार्यो में सफलता के योग हैं, धन के लेनदेन में सावधानी रखें, सप्ताह के मध्य में वाणी संयम से काम लें, अन्यथा आपसी लोगों से विवाद या मनमुटाव हो सकता है, इस बात का विशेष ध्यान रखें, यात्रा में लाभ की अपेक्षा परेशानियां अधिक होंगी, योजना पूरी करने के लिये किसी का सहयोग उल्लेखनीय रहेगा, भूमि भवन, जमीन जायजाद के कार्यो में खर्च होगा.

कुम्भ

नवीन योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, कार्यक्षेत्र में अधिनस्थों का रवैया आपके प्रति असहयोगात्मक हो सकता है, अच्छा होगा कि आप उनसे बातचीत की पहल करें, व्यवसायिक क्षेत्र में चतुराई से कार्य में लाभ मिलेगा, संतान के कार्यो में खर्च होगा, प्रसन्नता का अनुभव कम ही कर पायेंगे, गुरूवार के बाद बनने वाला संपर्क आपको दूरगामी शुभ परिणाम देगा.

मीन

कामकाज की अधिकता रह सकती है, आय के साधन बढ़ेंगे, अहं से बचना चाहिये, रूका हुआ धन प्राप्त होने की आशा है, अधिकारी वर्ग आपकी छबि बिगाड़ने का असफल प्रयास करेंगे, यात्राओं की अधिकता रहेगी, बिना सोचे समझे, किसी भी कार्य के संबंध में निर्णय न करें, बातचीत में मधुरता बनाये रखें, नौकरी में नई योजना की संभावना है.